Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

प्राकृतिक संसाधन एवं उनका संरक्षण

डॉ. राजेश कुमार मिश्रा, पूर्णिमा श्रीवास्तव

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, डाक घर आर. एफ. आर. सी., मंडला रोड, जबलपुर (म. प्र.), भारत

Article Info
Volume 5, Issue 3
Page Number : 13-20

Publication Issue :
May-June-2022

Article History
Accepted : 05 May 2022
Published : 15 May 2022

शोधपत्रसार:- हमारी विभिन्न आवश्यकताओं एवं उद्देश्यों को पूरा करने में समर्थ रहनेवाले तत्व संसाधन कहलाते हैं। मनुष्य की जरूरतों को पूरा करनेवाले विभिन्न मूर्त एवं अमूर्त तत्व संसाधन की श्रेणी में आते हैं। मूर्त श्रेणी में भूमि, जल, वन, मिट्टी, खनिज पदार्थ, कृषि उपज, औद्योगिक उत्पादन, कारखाने, भवन, सड़के आदि मुख्य हैं। अमूर्त श्रेणी में मनुष्य का स्वास्थ्य, वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान, कार्यकुशलता, सामाजिक संगठन, आर्थिक उन्नति, राजनीतिक स्थिरता, अन्तरर्राष्ट्रीय सहयोग एवं संगठन आदि सम्मिलित हैं।

शोधबिन्दव:- प्राकृतिक संसाधन, संरक्षण, पर्यावरण, स्वास्थ्य, तकनीकी ज्ञान, कार्यकुशलता, सामाजिक संगठन, आर्थिक उन्नति, राजनीतिक स्थिरता

पृथ्वी पर अथवा अन्य ग्रहों एवं उपग्रहों पर पाया जानेवाला प्रत्येक पदार्थ जो मनुष्य के लिये उपयोगी है, संसाधन कहलाता है। मनुष्य के ज्ञान और तकनीक के विकास के साथ-साथ नये –नये संसाधन अस्तित्व में आते हैं, जिससे संसाधनों की सँख्या बढ़ती जाती है। पर्यावरण तथा संसाधन दोनों ही मानव के लिए अहम हैं। इनको एक-दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। दोनों आपस में एक दूसरे से मिले हुए हैं।

हमारा पर्यावरण प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। प्राकृतिक संसाधन वातावरण की कुल परिस्थितियों के योग का एक हिस्सा है। जिसके कारण मानव जीवन व समाज का अस्तित्व है। प्राकृतिक संसाधन प्रकृति के द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं। इनमें वायु, पानी, सौर ऊर्जा, भूमि, मृदा, सतही जल, भूमिगत जल, विभिन्न प्रकार के खनिज, वनस्पतियां, जीव-जन्तु तथा स्वयं मानव भी आते हैं।

पर्यावरण के तत्वों (संसाधनों) को तीन बड़े समूहों में बांटा गया है। (1) भौतिक तत्व जैसे पर्वत, झील, नदी, सागर, वर्षा आदि। (2) जैविक तत्व जैसे वृक्ष, घास, जन्तु आदि। (3) मानवीय तत्व या सांस्कृतिक तत्व जैसे जनसंख्या तथा मानव निर्मित पर्यावरण के तत्व (आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तत्व आदि)।

पर्यावरण तत्व स्वयं में संसाधन नहीं होते हैं। अपितु वे संसाधन बनते हैं। जब वे मनुष्य के उपयोग या सम्पर्क में आते हैं। अतः किसी देश के पर्यावरणीय तत्व या पर्यावरणीय तत्वों की उपज ही उस देश के संसाधन होते हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्राकृतिक संसाधन प्रकृति प्रदत्त उपहार हैं। ये मानव की भौतिक व अभौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। संसाधन राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के आधार का निर्माण करते हैं। मनुष्य ने इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपने जीवन के विकास के लिए आवश्यक माना है।

प्राकृतिक संसाधनों को उनकी गुणवत्ता, परिवर्तनशीलता तथा पुनः प्रयोग के आधार पर निम्न प्रकार में बांटा गया है।

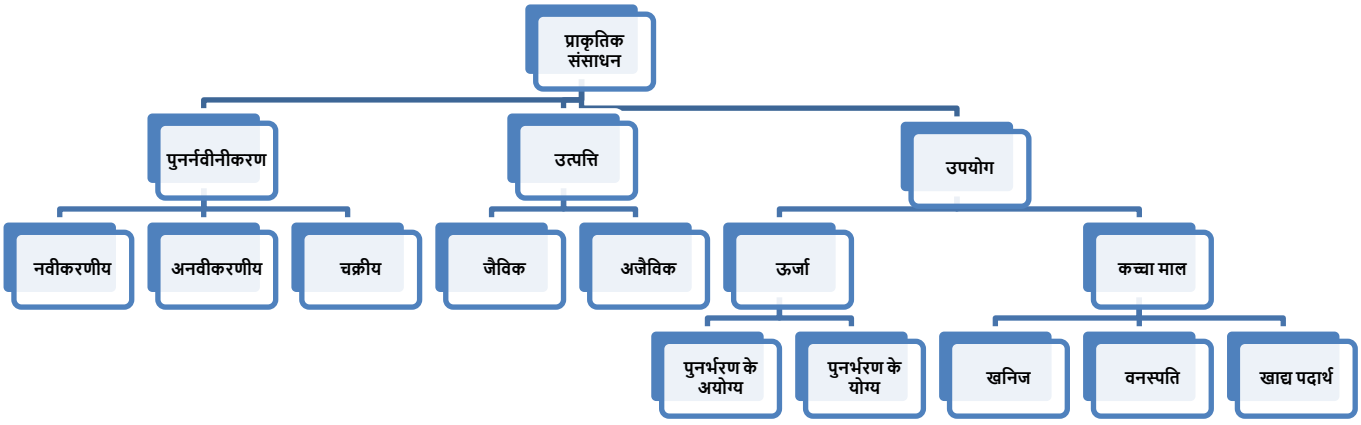

नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन

इसमें ऐसे प्राकृतिक संसाधन आते हैं जिसे बार-बार उपयोग में लाया जा सकता है। जैसे जल, ऊर्जा, वायु, मिट्टी आदि।

अनवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन

ये वे संसाधन हैं जिन्हें प्राकृतिक रूप से बनने में हजारों –लाखों वर्षों का समय लगता है। जैसे कोयला, तेल, खनिज और प्राकृतिक गैस। इस कारण ऐसे संसाधनों का मानव द्वारा पुनर्निमाण सम्भव नहीं है। इसलिए इन्हें अनवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन कहते हैं। अनवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन को भी दो भागों में बांटा गया है, जैविक और अजौविक संसाधन।

जैविक संसाधन

इसमें पर्यावरण के सभी जीवित तत्व सम्मिलित हैं। जैसे वनोत्पाद, फसले, पक्षी, वन्य जीव. मछलियाँ व अन्य समुद्री जीव।

अजैविक संसाधन

इसके अन्तर्गत पर्यावरण के समस्त निर्जीव पदार्थ सम्मिलित हैं। जैसे भूमि, जल, वायु, खनिज पदार्थ-लोहा, सोना, ताँबा आदि अजैविक संसाधन हैं।

प्राकृतिक संसाधन और मानव उपयोग

कोई भी प्राकृतिक पदार्थ तब तक संसाधन नहीं बन सकता जब तक मनुष्य उसे अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग में नहीं लाता है। प्राकृतिक संसाधनों को मानव उपयोगिता के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है।

भोज्य पदार्थ

इसमें कृषि उत्पादन से प्राप्त भोज्य पदार्थ जैसे चावल, गेहूँ, मक्का, चीनी, पेय पदार्थ- चाय, कॉफी, शाक-सब्जी, वनस्पति तेल- सोयाबीन, सरसों आदि, फल, मसाले आदि। जन्तुओं से प्राप्त भोज्य पदार्थ- घी, दूध, मक्खन, मांस, मछली, अण्डे, शहद आदि।

कच्चे माल

खनिज से प्राप्त लौह धातु – लोहा, मैग्नीज, तांबा, सीसा, चांदी, सोना, प्लेटिनम, यूरेनियम, गंधक, पारा आदि। वनों से प्राप्त कच्चे माल जैसे रूई, गोंद, लाख, रबर, कपूर आदि। जन्तुओं से प्राप्त कच्चे माल जैसे- ऊन, खालें, बाल, चमड़े, हाथी दांत, चर्बी आदि। कृषि द्वारा उत्पादित कच्चे माल जैसे कपास, रबर, तिलहन, बीज।

शक्ति संसाधन

लकड़ी, कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि।

जब मानव अपनी संस्कृति के साथ प्रकृति पर कार्य करता है। तब वह उससे बहुत से संसाधन प्राप्त करता है। मानव स्वयं एक संसाधन है क्योंकि मानव ऊर्जा तथा दक्षता का एक अक्षय भंडार है। मानव अपनी इच्छाओं और जरुरतों को पूरा करने वाले संसाधनों का निर्माता भी है। मनुष्य का ज्ञान ही सबसे बड़ा संसाधन है। मानव जो कि विवेकशील प्राणी है को प्रकृति द्वारा प्रदत्त विभिन्न संसाधनों का दोहन सीमित आवश्यक जरुरतों को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। इन प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण अन्धाधुन दोहन वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ भावी पीढ़ियों के लिए कठिनाईयां पैदा कर सकता है। मनुष्य को अपनी सभ्यता के विकास को निरन्तर बनाए रखने के लिए जहाँ पुनर्नवीकरण संसाधनों पर अधिक ध्यान देना होगा वहीं नवीन संसाधनों की भी खोज करनी होगी।

जैविक संसाधन

वन

वर्तमान में भारत की 75.5 मिलियन हेक्टेयर भूमि वनाच्छदित है जि कि कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 23% है। हमारी राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 33% भू-भाग को वनाच्छदित होना चाहिए। भारत में पायी जानेवाली वनस्पतियों को छः भागों में बांटा गया है। उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन, उष्णकटबंधीय पर्णपाती वन, कटीली झाड़ियां, ज्वारीय वन और पर्वतीय वन।

प्राकृतिक संसाधनों मे वन संसाधनों का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वन संसाधन हमारे वातावरण को भी स्वच्छ बनये रखते हैं। अनेकों प्रकार के पेड़-पौधे जो मानव समुदाय को अनेकों प्रकार से लाभ पहुँचाते हैं।

वन्य जीव

भारत मे वन्य जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं। लगभग 75000 प्रजातियाँ वन्य जीवों की भारत में पाई जाती हैं। गुजरात के गिर वनों में भारतीय सिंह मिलते हैं। भारत में बंदरों और हिरणों की कई प्रजातियाँ हैं। चिंकारा, कृष्ण मृग, चौसिंगा जैसे मनमोहक जानवर भी हैं। असम, केरल और कर्नाटक के वनों में विशालकाय हाथी पाये जाते हैं जो कि स्तनपायी वन्य जीवों में से एक हैं। 1200 से अधिक प्रजातियाँ पक्षियों की पाई जाती हैं। मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। यहाँ कोयल और बुलबुल जैसे गाने वाले पक्षी भी मिलते हैं। वनों व नम भूमियों में बत्तख, मैना, तोते, कबूतर, सारस, धनेश और सनबर्ड पाये जाते हैं।

कृषि संसाधन

हमारा भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ का जीवन कृषि संसाधनों पर आधारित है। कृषि कार्य में उपयोग होने वाअले पशु जैसे बैल, गाय, भैंस आदि भारत में कृषक समुदाय के मित्र हैं। खेतों की जुताई, बुवाई, गहाई और कृषि उत्पादों में इनसे भरपूर कार्य लिया जाता है। बकरियों से दूध, माँस, बाल व चमड़ा मिलता है। गाय व भैंस द्वारा दूध और भेड़ से ऊन, मांस, चमड़े की प्राप्ति होती है। अंडे व पंखों के लिए चूजे, बत्तखें, गीज व टर्की पाली जाती हैं।

मृदा संसाधन

मृदा के विकास में मूल शैल, जलवायु, वनस्पति, भूमि की ढाल, समयावधि, जीव-जन्तु तथा मनुष्य का प्रमुख सहयोग होता है। मिट्टी की निर्माण प्रक्रिया में जलवायु के तत्वों विशेष रूप से तापमान और आर्द्रता का सर्वाधिक योगदान होता है।

मृदा वर्गीकरण

रंग के आधार पर

1. श्वेत मिट्टी
2. लाल मिट्टी
3. भूरी मिट्टी
4. पीली मिट्टी
5. काली मिट्टी

गठन के आधार पर

1. चिकनी मिट्टी
2. बालुई मिट्टी
3. बालुई दोमट मिट्टी

4. दोमट मिट्टी

कटिबंध के आधार पर

1. लेटराइटीकरण
2. कैल्सीकरण
3. पाडजलीकरण

विश्व की प्रमुख मिट्टियाँ

1. अंतःकटिबंधीय मिट्टीयाँ
2. अपार्श्विक या अस्तरी मिट्टियाँ
3. कटिबंधीय या सुस्तरी मिट्टियाँ

मिट्टी की उर्वरता उसके भौतिक गुणों पर निर्भर करती है। जिस पर खनिज पदार्थों तथा जैव पदार्थों की उपस्थिति, मृदा गठन, जल धारण की सामर्थ्य आदि कारक प्रभाव डालते हैं। मृदा की उत्पादन क्षमता प्राप्त करना, उर्वरक तत्वों की अपेक्षित मात्रा व अनुपात को नियंत्रित रखना आदि मृदा संरक्षण के अंतर्गत आते हैं।

जल संसाधन

जल ही जीवन है। एक अमूल्य संसाधन जल है। इसमें सामुद्रिक जल, धरातलीय जल, नदियाँ एवं भूमिगत जल, वर्षा एवं महासागरों के रूप में जल संसाधन मुख्य हैं। भारत की नदियाँ धरातलीय जल का प्रमुख स्त्रोत हैं। आज 70% से भी ज्यादा जनसंख्या अपनी घरेलु आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूजल का उपयोग करती है। प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, भूमध्य सागर, महाद्वीपीय जल सामुद्रिक जल के प्रधान स्त्रोत हैं।

खनिज संसाधन

खनन द्वारा प्राप्त होनेवाले समस्त पदार्थ खनिज की श्रेणी में आते हैं। जैसे कोयला, लोहा, पेट्रोलियम पदार्थ आदि। भारत खनिज संसाधनों में बहुत ही धनी है और विश्व के देशों में भारत के लौह भण्डार का द्वितीय स्थान है। यहाँ संसार के 25% लौह भण्डार स्थित हैं। भारत से कच्ची लौह धातु का निर्यात कई बड़े देशों (जापान, जर्मनी, पोलैण्ड, इटली) में किया जाता है। मानव जीवन में खनिज पदार्थों की अहम भूमिका है। ये विश्व के मूल्यवान पदार्थों में से एक है। अन्तरर्राष्ट्रीय व्यापार में भी खनिज पदार्थों व्यापक योगदान है। नमक, चूना, गन्धक, ग्रेफाईट, बॉक्साइट, अभ्रक, लोहा, मैग्नीज, ताँबा, जस्ता, सोना, चाँदी, यूरेनियम, प्राकृतिक गैस आदि।

मत्स्य संसाधन

मत्स्य पालन का वर्तमान समय में एक उद्योग के रूप में विकास किया जा रहा है। मछली पकड़ना एक परम्परागत व्यवसाय है जिसका प्रचलन प्राचीनकाल से चला आ रहा है। मछली एक महत्वपूर्ण भोज्य पदार्थ है। मछली का तेल दवाइयाँ बनाने में भी प्रयुक्त होता है। मछलियों का जलीय संसाधन में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण स्थान है। सागर के

खारे पानी, नदियों, झीलों, तालाबों में मछलियों के भोजन की पर्याप्त उपलब्धता, सागरीय धाराओं आव्र कुशल मछुआरों के कारण देश में मत्स्य उद्योग के विकास के प्रचुर अवसर हैं । यहाँ सागरों व महासागरों में सागरीय मात्स्यिकी तथा झीलों, नदियों, जलाशयों में अंतःस्थलीय मात्स्यिकी की जाती है ।

भारत में लगभग 1800 से भी ज्यादा मछलियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं । मछिच्लयों के अनेक प्रकार हैं जिन्हे जलाशय की प्रकृति के अनुसार दो भागों में बाँटा गया है

1. स्वच्छ जल की मछलियाँ
2. खारे पानी की मछलियाँ

विश्व में उत्पादित मछिच्लयों का 84% खारे पानी से और 16% स्थलीय स्वच्छ जलाशयों (नदी, झील, तालाब) से प्राप्त किया जाता है । मैकेरल, प्रॉन, सिल्वर बेलीज सागरीय मात्स्यिकी का हिस्सा हैं । प्रमुख मछिच्लयाँ रोहिता, कतला, मृंगल, कार्प आदि अंतः स्थलीय मात्स्यिकी से आता है ।

ऊर्जा संसाधन

हमारे जीवन में संसाधनोंका भी बड़ा महत्व है । विश्व में अधिकांश भागों में ऊर्जा की खपत में वृद्धि हो रही है । ऊर्जा संसाधनों को दो भागों में बाँटा गया है ।

पुनः उपयोगी संसाधन

प्रवाही जल या जल शक्ति

पुनः अनुपयोगी संसाधन

प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम, कोयला आदि ।

विश्व स्तर पर उत्पादित समस्त शक्ति संसाधनों का 84% कोयला व पेट्रोलियम द्वरा, 40% प्राकृतिक गैस, जल विद्युत एवं ताप शक्ति द्वारा तथा 15% आण्विक शक्ति द्वारा प्राप्त होता है ।

मानव संसाधन

प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग माना अपनी जरूरतों के लिए करता है तो वह मानव संसाधन बन जाता है । मानव भूमि, जल, मिट्टी, खनिज, वनस्पति, ऊर्जा के संसाधनों, जीव जन्तुओं आदि का उपयोग करके उत्पाद, कृषि, पशुपालन उद्योग, व्यापार, परिवहन आदि को सम्भव बनाता है तथा सामाजिक संगठन, राजनीतिक प्रबन्ध और सांस्कृतिक विकास करता है।

मानव अपनी शिक्षा, विज्ञान और टेक्नॉलाजी का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संस्कृति का निर्माण करता है । अतः पृथ्वी पर विभिन्न क्षेत्रों में मानव संसाधन की संख्या, उसका प्रादेशिक वितरण, वृद्धि महत्वपूर्ण है । इस प्रकार स्वयं मानवीय शक्ति बौद्धिक ज्ञान व तकनीकी सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है ।

संसाधनों का उपयोग

मनुष्य प्राचीनकाल से ही विभिन्न संसाधनों का उपयोग अपनी जरुरतों के अनुरूप करता आ रहा है । यह प्रक्रिया 'संसाधन उपयोग' कहलाती है । प्राकृतिक संसाधनों ने हमारे देश्स के विकास में अहम भूमिका निभाई है । भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा कृषि प्रधान देश है । भारत की विशाल खनिज सम्पदा ने इसे औद्योगिक रूप से विकसित होने में समर्थ बना दिया है ।

विश्व के प्रमुख संसाधन प्रदेश

मानव संसाधन और प्राकृतिक संसाधनों की पारम्परिक प्रतिक्रियाओं के फलस्वरुप बने दृश्य भूमि के दृष्टिकोण से एक विशिष्ट संगति रखनेवाला प्रदेश भी संसाधन प्रदेश कहलाता है ।

सम्पूर्ण कनाडा तथा संयुक्त राज्य अमेरिका

संसाधन प्रदेश के दृष्टिकोण से कनाडा प्राकृतिक तत्वों में प्रधान है । शक्ति संसाधन के अधिकांश स्त्रोत आंग्ला-अमेरिका के पूर्वी प्रदेश में ही हैं ।

उत्तरी पश्चिमी अनुसमुद्रीय प्रदेश

इसमें ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैड, हालैण्ड, नार्वे के तटीय प्रदेश शामिल हैं । यह प्रदेश हर दृष्टिकोण से समृद्ध है

भारत के संसाधन प्रदेश

यह प्रदेश मध्यम-स्तरीय प्राकृतिक संसाधनों की श्रेणी में आते हैं । इन्हें आर्थिक विकास की गतिशीलता के अनुसार तीन प्रमुख वर्गों में बाँटा गया है ।

गत्यात्मक प्रदेश

पश्चिम बंगाल डेल्टा, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, पंजाब एवं गंगा-यमुना मैदान, दक्षिण पूर्व में कर्नाटक पठार आदि आते हैं । इनका प्रमुख संसाधन सोना, लोहा, चूना, पत्थर, हीरा, कोयला, जल विद्युत, वन सम्पदा, पेट्रोलियम, जल आदि हैं ।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

हमें प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के प्रति जागरुक होना बहुत जरूरी है । नये संसाधनों की खोज, कचरे को कम से कम करने की तकनीक और अनवीकरणीय संसाधनों के संरक्षण के लिए हमें अपने अनुसंधान और विकास के प्रयत्नों को बढ़ाना होगा । इसके लिए पूरे विश्व में 28 जुलाई को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस मनाया जाता है । इस दिन मित्रों और परिवार के साथ प्रकृति के संरक्षण के महत्व के बारे में संदेश फैलाना चाहिए । इस दिवस को विभिन्न संगठनों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों, वृक्षारोपण, सेमिनार आदि में भाग लेकर मनाया जाता है । इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के बारे में जागरुकता बढ़ाना और लोगों को हमारे प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को और मूल्य को समझाना है । प्रकृति का संरक्षण मूल रूप से उन सभी संसाधनों का संरक्षण है जो प्रकृति ने मानव जाति को भेंट किए

हैं। ये सभी उपहार संतुलित वातावरण बनाने में मदद करते हैं तथा ये सब मनुष्य के अस्तित्व के लिए उपयुक्त हैं। अतः प्रकृति का संरक्षण अति महत्वपूर्ण है। संरक्षण का स्पष्ट उद्देश्य वन्य जीवों की रक्षा करना और जैव विविधता को बढ़ावा देना है।

भारत सरकार ने हमारे जैविक व अजैविक संसाधनों के संरक्षण के लिए कई योजनाएँ बनाई हैं व कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया है।

राष्ट्र में वन एवं पर्यावरण से जुड़े मुद्दों को उच्च प्राथमिकता देने के लिए वर्ष 1980 में केन्द्रीय स्तर पर वन एवं पर्यावरण मंत्रालय बनाया गया। आज सभी राज्य सरकारों ने भी वन एवं पर्यावरण का स्वतंत्र मंत्रालय बनाया है। आज सभी राजय सरकारों ने भी वन पर्यावरण का स्वतंत्र मंत्रालय बनाया है।

1950 की राष्ट्रीय वन नीति को, राष्ट्र की तात्कालिक आवश्यकता के अनुसार वनों के संरक्षण, सुरक्षा व विकास के लिए 1988 में संशोधित किया गया। इस नीति के अन्तर्गत हरित क्षेत्र को बढ़ाने, जलाऊ लकड़ी के उत्पादन व आपूर्ति आदि के लिए सामाजिक वानिकी योजना प्रवर्तित की गई।

भूमि संसाधनों के संरक्षण हेतु 1983 में राष्ट्रीय भूमि उपयोग एवं संरक्षण बोर्ड की स्थापना की गई। वर्ष 1985 में इसे पुनः संगठित किया गया है।

राष्ट्रीय जल नीति वर्ष 1987 में पारित की गई जो सिंचाई, जल, विद्युत उत्पादन, नौ संचालन, जल के औद्योगिक व अन्य उपयोग के अलावा सबसे बढ़कर पेयजल को प्राथमिकता देती है।

खनिजों के उत्खनन व निर्यात के लिए घरेलू, विदेशी उपक्रमों को निवेश हेतु 1990 में राष्ट्रीय खनिज नीति बनाई गई।

नई कृषि नीतिमें पारिमित्र व सततवाही कृषि तकनीकों जैसे- जैव तकनीक को प्रोत्साहित किया गया है।

निष्कर्ष

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए विभिन्न विधियों, जैसे- वनरोपण, पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीदार कृषि, सिंचाई की आधुनिक तकनीकों का उपयोग, खनिजों का सार्थक उपयोग, ऊर्जा के स्थानापन्न स्त्रोतों का उपयोग किया जाना चाहिए। सरकार ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु कई मापदण्ड अपनाएँ हैं। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए कुछ नीतियों का गठन व कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया गया है जिसमें राष्ट्रीय वन नीति का गठन, राष्ट्रीय भूमि उपयोग एवं संरक्षण बोर्ड की स्थापना, राष्ट्रीय जल नीति, खनिज नीति व कृषि नीति आदि। ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी विकास के माध्यम से संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जा सकता है किंतु साथ में यह भी ध्यान रखना है कि ये संसाधन मात्र वर्तमान हेतु ही नहीं है अपितु भविष्य में भी इनकी आवश्यकता होगी। अत: संरक्षण के प्रति हमें सदैव सचेष्ट होना आवश्यक है। संसाधनों के उचित उपयोग द्वारा हम वर्तमान के साथ-साथ भविष्य को भी सुंदर और सुखद बना सकते हैं।